शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

छत्तीसगढ़ के यदुवंशियों का सांस्कृतिक अध्ययन

डॉ. एस.कुमार
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर
स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
दुर्ग, छत्तीसगढ़

शोध संक्षेप

छत्तीसगढ़ के सामाजिक एवं सांस्कृतिक अवदान में यदुवंशियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कृषिप्रधान राज्य होने के कारण यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय पशुपालन भी रहा है। प्राचीन काल में कृषि कार्यो हेतु प्रमुखतः पशु धन (बैल, भैंस) का उपयोग होता आया है। आधुनिकीकरण के इस युग में अब यह कार्य आधुनिकतम मशीनों के द्वारा सम्पादित किया जाने लगा है। पशु धन सुरक्षा का कार्य आज भी यदुवंशी जाति के लोगोद्वारा ही किया जाता है। इनकी लोक-कलाएं, लोक नृत्य एवं दोहे लोक शिल्प एवं लोक चित्र ग्रामीण जीवन में शिष्टता, शिक्षा, संस्कार, रागात्मकता और नवीन ऊर्जा का संचार करती है। छत्तीसगढ़ में विद्यमान विभिन्न जातियों में राउत जाति का विशिष्ट स्थान है। यहाँ के लोक जीवन और लोक संस्कृति को यादवों ने पोषित एवं पल्लवित किया है। इन्हें राउत, अहिर, यादव, यदुवंशी पहाटिया, ठेठवार, चरवाहा, बरदिहा आदि-आदि अनेक नामों से इस अंचल में अभिहित किया जाता है। प्रस्तुत शोध छत्तीसगढ़ राज्य के राजनांदगाँव व विकासखण्ड के अन्तर्गतकिया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

तथ्यों का संकलन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में तथ्यों के संकलन हेतु स्रोत मुख्यतः दो प्रकार के हैं -

(क) प्राथमिक तथ्यों का संकलन

विषय से संबंधित प्राथमिक तथ्यों का संकलन निम्न उपकरणों के द्वारा संपन्न किया गया- साक्षात्कार, अवलोकन विधि, छायाचि (फोटोग्राफी)।

(ख) द्वितीयक तथ्यों का संकलन

विषय से संबंधित द्वितीयक तथ्यों के संकलन हेतु निम्न स्रोतों का प्रयोग किया गया- शोध पत्र, शोध प्रबंध, विषय या अध्ययन संबंधी पुस्तकें, शासकीय दस्तावेज, अन्य माध्यम (जैसे-समाचार पत्र, पत्र-पत्रिकायें, इंटरनेट,टेलीविजन व अन्य)।

विश्लेषण

भारत की 125 करोड़ जनसंख्या की कुल आबादी का 22 प्रतिशत भाग यादव वंश का है और इतने ही प्रतिशत की आबादी नेपाल में रहती है। भारत का 12.7 प्रतिशत व्यापार यादव समाज के लोग करते हैं। यादव समाज के 423 से भी ज्यादा उप-नाम हैं तथा इसे दुनिया के इतिहास की सबसे बड़ी जाति कहा गया है। 'भारत में अवस्थित जितनी जातियाँ है उनमें यादवों और ब्राह्मणों का इतिहास सबसे पुराना है।[1] प्राचीनतम वैदिक युग से ही हमें यदुवंश के अस्तित्व का प्रमाण मिलता है। अन्य जातियां अधिकतर

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मध्यकाल से अपना उल्लेख पा सकी हैं लेकिन यादव जाति इस मायने में वैदिक जाति है इसके वंश का उल्लेख वेदो में भी मिलता है।[2]

छत्तीसगढ़ के गांवों का सामाजिक ताना-बाना आज भी जीवंत है। गांव की सामाजिक संरचना में लोगों में परस्पर संबंध और भाईचारा अभी भी बना हुआ है। खेती किसानी और इनसे जुडे काम में एक दूसरे की निर्भरता इन्हें आपस में जोड़े रखती है। गांव में कुम्हारी, बढ़ाईगिरी, लोहारी, चर्मशिल्प, तेलपेराई, धोबी जैसे कई व्यवसाय ग्रामीण जन-जीवन से सीधे जुड़े हैं। वर्तमान परिस्थिति में पौनी-पसारी की परंपरा भले ही कमजोर हुई हो, लेकिन आज भी यह मौजूद है। गांव में जब तक यह परंपरा सुदृढ़ रही लोगों को अपने काम काज के लिए भटकना नहीं पड़ा। बदलती हुई परिस्थितियों में भी गांव के कमजोर तबकों को रोजगार दिलाने में पौनी पसारी व्यवस्था महत्वपूर्ण रही है।[3]

पौनी - पसारी (जजमानी) यह व्यवस्था पूर्णतः जाति पर आधारित है। समाज में कोई भी व्यक्ति हर तरह के कार्यो को नहीं कर सकता है। एक सामाजिक प्राणी के रूप में प्रत्येक व्यक्ति की अनेक आवश्यकताएँ होती है, जिन्हें पूरा करने के लिए उसे एक-दूसरे के सहयोग की आवश्यकता पड़ती है। जाति व्यवस्था के अन्तर्गत प्रत्येक जाति के सदस्यों के कार्य निर्धारित होते हैं। इस क्रम में प्रत्येक जाति अपनी सेवाएं अन्य जाति के सदस्यों को उपलब्ध कराती है और उसके बदले उसे अन्य जाति के सदस्यों की सेवाएँ प्राप्त होती हैं। यदि कोई जाति सेवा के बदले सेवा उपलब्ध नहीं कराती है तो उसे सेवा लेने के बदले फसल के अवसर पर अन्न तथा कुछ नगद पारिश्रमिक सेवा देने वाली जाति को देना होता है। इस प्रकार जजमानी सबंधों की व्यवस्था एक तरह से विभिन्न जातियों में पाए जाने वाले प्रकार्यात्मक संबंधो की एक व्यवस्था कही जा सकती है। जजमानी प्रथा विभिन्न कार्यो का विभाजन सुनियोजित ढंग से करके गाँव की एकता व संगठन को बनाए रखने में सहायक रही है।

छत्तीसगढ़ के ग्रामीण परिवेश में पौनी-पसारी के अन्तर्गत आने वाली 4 जातियों राउत, नाई, धोबी, एवं लोहार में अधिकांशतः राउत जाति के लोग अपनी उपस्थिति कायम रखी हुई है। अपने आप को इस परंपरा से जोड़े हुए हैं। अभाव ग्रस्त जीवन जीते हुए भी कुंठाग्रस्त नहीं है। यदुवंशियों की अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक परम्पराएं हैं। आज अधिकांश जाति के लोग अपने परम्परागत, जातिगत व्यवसायों को छोड़कर अन्य कार्यो में लग गए हैं, परन्तु राउत (यादव) जाति के लोग आज भी अपने जातिगत व्यवसायों का निर्वहन कर रहे हैं तथा ग्रामीण समाज भी उन पर निर्भर है। साथ ही वे अपनी सांस्कृतिक विशिष्टता तथा पहचान को कायम रखे हुए है।

छत्तीसगढ़ के दुर्ग, बिलासपुर, रायपुर, कोरबा एवं राजनांदगाँव में यादव आबादी की सघनता है। वर्तमान छत्तीसगढ़ में यादवों की तीन प्रमुख शाखाएं ठेठवार (कनौजिया), झेरिया एवं कोसरिया ही बहुलता से निवास करती है। छत्तीसगढ़ की आबादी में इन सभी का संयुक्त रूप से हिस्सा 11 प्रतिशत अनुमानित है। यादवों की 17 उपजातियाँ छत्तीसगढ़ में निवासरत हैं इनमें झेरिया कोसरिया, फूलझारिया, ठेठवार, दसहा, गवली, भोरथिया, मगधा, गौली, ग्वाल, महकुल, गयार, मेनाव, दुधकौर, बरगाह, अठेरिया और ढलहोर ये सभी मूलतः यादव है। गोपालन तथा दुग्धोत्पादन से जीवकोपार्जन इनकी मुख्य वृत्ति है। गोपालन तथा गोचारण यादव जाति की ही पहचान है। इस समाज के सूत्रों का मानना है कि छत्तीसगढ़ में जनसंख्या के आधार पर यादव तीसरे स्थान पर है फिर भी ये पिछड़े हैं, क्योंकि ये असंगठित हैं।

लुसकिया मिचेलुत्ती के यादवों पर किए गए शोध अनुसार, "यादव लगातार अपने जाति स्वरूप आचरण व कौशल को उनके वंश से जोड़कर देखते आए हैं, जिससे उनके वंश की विशिष्टता स्वतः ही व्यक्त होती है। उनके लिए जाति मात्र पदवी नहीं है बल्कि रक्त की गुणवत्ता भी है और ये दृष्टव्य नया नहीं है। अहीर वर्तमान में यादव जाति की वंशावली एक सैद्धांतिक क्रम के आदर्शों पर आधारित है तथा उनके पूर्वज गोपालक योद्धा श्री कृष्ण पर केन्द्रित है जो एक क्षत्रिय थे।[4]

क्रिस्टोक जफ्फेर्लोट के अनुसार, "यादव शब्द कई उप-जातियों को आच्छादित करता है जो मूल रूप से अनेक नामों से जानी जाती है। हिन्दी क्षेत्र पंजाब व गुजरात में अहिर, महाराष्ट्र व गोवा में गवलीख आंध्र व कर्नाटक में गोल्ला, तमिलनाडु में कोनर, केरल में मनियार, जिनका सामान्य पारंपरिक कार्य चरवाहे, गोपालक तथा दुग्ध विक्रेता का था।"[5]

समाजशास्त्री एम.एस.ए. राव के अनुसार, "यादव एक हिन्दू जाति वर्ण आदिम जनजाति या नस्ल है, जो भारत एवं नेपाल में निवास करने वाले परम्परागत चरवाहो एवं गरेडिया समुदाय अथवा कुल का एक समूह है और अपने को पौराणिक राजा यदु के वंशज मानते है। इनका मुख्य व्यवसाय पशु-पालन तथा कृषि था।"[6]

छत्तीसगढ़ में यादवों की लोक संस्कृति एवं परम्पाएं

1 हाथा (भित्ति चित्र) - छत्तीसगढ़ में दीपावली के समय दीवारों पर बनाया जाने वाला चित्र है। हाथा देने के पीछे लोक मान्यता है कि इससे घर में पशु धन एवं फसल को किसी की नजर नहीं लगती और वह सुरक्षित रहता है। गाँव का चरवाहा जिसे राउत, बरदिहा या पहाटिया भी कहा जाता है जो पशुओं को चराने के साथ-साथ देखभाल भी करता है। दीपावली के दिन रउतईन (राउत की पत्नी) अपने मालिक व उसके परिवार की सुख समृद्धि की कामना के लिए कोठी (अन्नागार) व कोठा (गौशाला) में हाथा लिखती है हाथा अनगढ़ किन्तु कलात्मक भित्ति चित्र है। जिसे सहज रूप् से चुड़ी रंग़ तरोई या भेंगरा के पत्तों के रंगो से चित्रित करती हैं हॉथा सुख समृद्धि का प्रतीक है इसे सुखधना भी कहते है

हाथा (भित्ति चित्र)

रउतईन (राउत की पत्नी)

2 राउत नृत्य एवं दोहे - यादव जाति का यह नृत्य शौर्य एवं वीरता का संगम है। गड़वा बाजा (दफड़ा, मोहरी, गुदुम, दमउ, झुनझुना) के ताल और लय के साथ यादवों की, रागात्मक दोहे वातावरण में जोश व उमंग का संचार करता है, विभिन्न अवसरों पर दीपावली पर्व में, साहई बांधते समय, विशेष मातर पर्व पर, मडई एवं कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर राउत यादव लोग विशेष साज सज्जा के साथ, अपने नृत्य करते हुए इन पर्वो को विशिष्टता प्रदान करते हैं।

इस नृत्य में राउत लोग विशेष वेशभूषा पहनकर हाथ में सजी हुई लाठी लेकर टोली में गाते नाचते हुए निकलते हैं। नृत्य के बीच में दोहे गाए जाते हैं। दोहे भक्ति नीति हास्य तथा पौराणिक संदर्भो से युक्त होते हैं। राउत नृत्य में प्रमुख रूप से पुरूष सम्मिलित होते हैं। उत्सुक्तावश बालक भी इनका अनुसरण करते हैं। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में होने वाला राउत नृत्य महोत्सव बहुत प्रसिद्ध है।

3 बांस गीत -

छत्तीसगढ़ की यादव जातियों द्वारा बांस के बने हुए वाद्ययंत्र के साथ गाये जाने वाला लोकगीत है। बांसगीत में अहिमत रानी, कुंवर अछरिया, शीत बसंत, कंठी ठेठवार आदि के गाथा गाया जाता है। बांस गीत में एक गायक होता है, उसके साथ दो बांस बजाने वाले होते हैं। गायक के साथ दो और व्यक्ति

होते हैं, जिसे रागी और डेही कहते है। रागी वह व्यक्ति है जो गायक को राग में स्वर देता है तथा डेही वह व्यक्ति है जो गायक व रागी को प्रोत्साहित करता है जैसे 'अच्छा', 'वाह-वाह' आदि कहकर। छत्तीसगढ़ में मालिन जाति के बांस को सबसे अच्छा माना जाता है। बीच से बांस को पोला करके उसमे चार सुराख बनाये जाते हैं, जैसे बाँसुरी वादक की उँगलियां सुराखों पर नाचती है उसी तरह बांस वादक की उँगली भी सुराखों पर नाचती है और वह विशेष धुन निकालने लगता है।

4 खुमरी - बांस से निर्मित एक ऐसा शिल्प है जिसे सिर पर पहना जाता है। इसका प्रयोग धूप एवं बारिश से बचाव के लिए किया जाता है। ऊन के धागों के गुच्छे, रस्सी और रंगों का प्रयोग कर इसे आकर्षक व मोहक बनाया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी यादव जाति क लोग गोचारण के समय खुमरी का प्रयोग प्रमुखता से करते हुए देखे जा सकते हैं। राउत नृत्य के समय भी इसका प्रयोग नृत्य को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए किया जाता है।

गोचारण के समय खुमरी का उपयोग करते हुए हिरू यादव

निष्कर्ष

यादव जाति के लोग अपने परंपरागत व्यवसाय के साथ ही अपनी लोक-कला, संस्कृति एवं शिल्प को संजोए हुए हैं। इनकी कला संस्कृति में शिक्षा एवं संस्कार है, जिसे वाचिक परम्परा के माध्यम से इसे नए पीढ़ी को हस्तांतरित कर रहे हैं। हमें आधुनिकता का व्यापक प्रभाव इनकी कला संस्कृति पर देखने को मिलता है। फिर भी इनके ये पारंपरिक मूल्य लोक को जीवन प्रदान कर रही है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 https://hi.wikipedia.org/wiki यदुवंश ***5 January 2014***

2 यदुवंश गौरव यादवों का प्राचीन इतिहास, प्रस्तुति : दिसम्बर 2020

3 nai duniya Publish Date: | Tue,07 Dec2021

4 चौसा विरेन्द्र कुमार यादव, जाति : एक परिचय, 2016 bkchausa.blogspost.com

5 वही

6 https://hi.wikipedia.org/wiki सदस्य:Nirbhay nirbhay/प्रयोगपृष्ठ